International Journal of Advanced Academic Studies 2023; 5(2): 16-19

**E-ISSN:** 2706-8927
**P-ISSN:** 2706-8919
www.allstudyjournal.com
IJAAS 2023; 5(2): 16-19
Received: 18-11-2022
Accepted: 23-12-2022

**डॉ. शशि पाण्डे**
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, डी0एस0बी0 परिसर, नैनीताल कुमांऊ विश्वविद्यालय, नैनीताल, उत्तराखंड, भारत

**Corresponding Author:**
**डॉ. शशि पाण्डे**
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, डी0एस0बी0 परिसर, नैनीताल कुमांऊ विश्वविद्यालय, नैनीताल, उत्तराखंड, भारत

# हिंदी पत्रकारिता में भारतेन्दु का योगदान

**डॉ. शशि पाण्डे**

**DOI:** https://doi.org/10.33545/27068919.2023.v5.i2a.928

**सारांश**
हिन्दी में पत्रकारिता का इतिहास अत्यन्त प्राचीन रहा है, परन्तु हम देखते है कि आधुनिक काल में पत्रकारिता मानव की जरूरत बनती जा रही हैं। आज हम मीडिया के माध्यम से छोटी से छोटी घटना को पत्रकारिता या विभिन्न समाचार पत्रों व समाचार चौनल के माध्यम से जानकारी प्राप्त कर लेते हैं, जनसचार का विकास दिनों–दिन बढ़ता जा रहा है पत्रकारिता साहित्य व भाषा के बिना अधूरी है, हिन्दी साहित्य में भारतेन्दु जी का पत्रकारिता के क्षेत्र में विशेष योगदन रहा हैं, लेखक ने अपनी लेखनी द्वारा समाज के हर क्षेत्र की घटनाए चाहे समाजिक हो आर्थिक हो राजनैतिक हो कर पहलू को हिन्दी साहित्य के माध्यम से समाज के समने प्रस्तुत किया. मेरा मानना है कि एक साहित्यकार ही पत्रकारिता के माध्यम से समाज में हो रही अच्छे बुरी घटनाओं को प्रकाशित करता है, आज के समय मे पत्रकारिता की बाढ सी आने लगी है विभिन्न शचियो के अनुसार समाचार पत्र प्रकाशित होने लगे है आज पत्रकारित सहित्य के साथ साथ सहित्य क्षेत्र मे भी आगे बढ रहा हैं।

**कुटशब्दः** समाचार पत्र, सहित्यकार, संस्कृति, जिज्ञासा, आन्दोलन, आदर्श व अवैतनिक

**प्रस्तावना**
पत्रकारिता मानव सभ्यता के विकास का एक महत्वपूर्ण लक्षण है। भाषा और लिपि के विकास के बाद अपनी अभिव्यक्ति को एक ठोस आधार प्रदान करने के लिए जागरूक और प्रबुद्ध समाज ने पत्रकारिता को विकसित किया। विचारों को व्यक्त करने का यह सबसे शक्तिशाली माध्यम है। रा.र. खडिलकर लिखते हैं कि दुनिया में कहीं भी किसी भी समय कोई छोटी–मोटी घटना या परिवर्तन हो, उसका शब्दों में जो वर्णन होगा, उसे पत्रों की ताकत हमें कलमों में दिखती है। कलम की ताकत का अहसास बड़ी–बड़ी निरकुंश शक्तियों, प्रतापी और स्वच्छन्द शासकों व दमनकारी तथा प्रतिक्रियावादी, व्यवस्थाओं ने भी किया है समाज में जाग्रति का विकास और उसे व्यापक सन्दर्भों में जोड़ने का काम पत्रों के माध्यम से सटीक रूप में होता है। इस प्रकार अखबार या समाचार पत्र जातीय हृदय का अन्तःकरण है। यदि हम इतिहास के पन्नों को पलटकर देखे तो पाते हैं कि मानव सभ्यता इतिहास में एक स्थान से दूसरे स्थान पर समाचार देने का काम नारद मुनि करते थे और इस प्रकार यह काम त्रेता युग में पवन पुत्र हनुमान ने किया। जिन्होंने अपने प्राणों की परवाह किये बिना राम चन्द्र का सन्देश सीता तक पहुँचाया। द्वापर युग में महाभारत की सम्पूर्ण घटना का आंखों देखा हाल संजय जो कि युद्ध स्थल से कोसों मील दूर बैठे जन्मांध हस्तिनापुर नरेश धृतराष्ट्र को बराबर 18 दिनों तक सुनाया। दूसरी ओर राजाओं के संदेश और आज्ञाएं प्रजा तक पहुँचाने के लिए शिलालेखों का प्रयोग किया जाता था। सम्राट अशोक ने अपने विचारों और धर्म का प्रचार करने के लिए शिलालेखों का माध्यम प्रस्तुत किया था। यहाँ तक कि कबूतरों को भी संदेश का माध्यम बनाया था। कबूतर गले में चिट्ठी बांध कर उसे तय स्थान पर पहुँचने के लिए उड़ा दिया जाता था। वही कबूतर चिट्ठी का उत्तर लेकर वापस अपने स्थान पर पहुँच जाता था। कबूतरों का सूचनाएं एक स्थान से दूसरे स्थान में पहुँचाने का सिलसिला लम्बे समय तक चला।
विश्व इतिहास में समाचार पत्रों ने बड़े–बड़े परिवर्तन कराने में मुख्य भूमिका निभाई है। मनुष्य को अपने कर्त्तव्यों व अधिकारों के प्रति जागरूक करने में जनता के विचारों और शिकायतों को शासक तक पहुँचाने में, शासक की नीतियों का मूल्यांकन करने में, शासक के समर्थन और विरोध में प्रचार करने में, हर प्रकार की क्रान्ति का सूत्रपात करने में यहाँ तक की मानव जीवन की हर चेष्टा को प्रभावित, आन्दोलित और निर्देशित करने में समाचार पत्रों की महत्वपूर्ण भूमिका है।
पत्रकारिता के जनक अंग्रेज पत्रकार जेम्स अगस्टस हिकी तथा विलियम ड्यूएन माने जाते है। हिकी भारत का पहला पत्रकार था, जिसने "बंगल गजर" लिखी। एच.ई. बस्टीड ने हिकी को भारतीय प्रेस का अगुआ माना है। सन् 1818 में जोशुआ मार्शमैन के सम्पादन में पहला भारतीय भाषा में "दिग्दर्शन" नामक पत्र निकाला। इसी वर्ष कलक्ता से समाचार दर्पण का भी प्रकाशन हुआ।

राजामोहन राय जिन्हें भारतीय पत्रकारिता का वास्तविक जन्म दाता माना जाता है उन्होंने सन् 1921 मे बंगाल में "संवाद कौमुदी" और फारसी में "मिरातुल" अखबार प्रकाशित किए, सन् 1822 में उर्दू का पहला अखबार "जाये–जहानुमा" प्रकाशित हुआ, 30 मई 1826 में पहला हिन्दी भाषा का पत्र "उदन्त मार्तण्ड" पण्डित जुगल किशोर के नेतृत्व में कलकता से प्रकाशित हुआ . धीरे–धीरे हिन्दी समाचार पत्रों की संख्या बढ़ती गई। जिस तरह साहित्य समाज का दर्पण है उसी तरह पत्रकारिता भी समाज की विभिन्न गतिविधियों का दर्पण है। पत्रकारिता का अर्ष मानव की जिज्ञासा वृत्ति रही है, जिज्ञासा की प्रवृति मानव का जीवन का मूलभूत गुण है। मनुष्य न सिर्फ अपने आस–पास के वातावरण से परिचित होना चाहता है, बल्कि दुनिया के दूसरे जगहों में क्या घटित हो रहा है। यह भी जानाना चाहता है, संसार की हर घटनों को जानने के लिए व हमेशा तत्पर रहता है। हिन्दी शब्द सागर के अनुसार पत्रकार का काम या व्यवसाय पत्रकारिता है। मनुष्य की यही जिज्ञासा और उत्सुकता की प्रवृत्ति पत्रकारिता के विकास में महत्वपूर्ण योगदान देती है,

पत्रकारिता और साहित्य को हम एक दूसरे के पूरक माना सकते हैं, हिन्दी साहित्य में पत्रकारिता के क्षेत्र में भारतेन्दु–युग के साहित्य अधिकांश पत्रकारिता का साहित्य है, भारतेन्द्र युग के साहित्य में मानव मूल्यों और मानवीय संवेदना की कलात्मकभूमि से उदासीन हो कर युग धर्म के प्रति अधिक सचेत था। इस कारण यह युग का साहित्य न होकर युग विशेष का साहित्य होकर रह गया, "समसामयिक परिवेश से किसी न किसी में प्रत्येक लेखक प्रेरणा ग्रहण करता है, चाहे वह साहित्यकार हो या पत्रकार दोनों ही लेखक है, दोनों ही सर्जनाकार है दोनों के कार्य किन्ही ऐसे गुणों की अपेक्षा करते हैं, जो दोनों के लिए अपरिहाय हैं– अनाविल दृष्टि चित्तन लेखन में प्रेषणीयता की शक्ति दोनो देश और काल के आयामों पर अपनी–अपनी विशिष्ट परम्पराओं के अतिरिक्ति उस संश्लिष्ट सांकृतिक परम्परा उस सामाजिक चेतन–प्रवाह से भी सम्बइ है जिससे उन्हें अपनी बात औरों के प्रति निवेदित करने की प्रेरणा कोर शक्ति मिलती हैं। प्रत्येक पत्रकार अंशता साहित्यकार भी है प्रत्येक साहित्यकार अनिवार्यता पत्रकार भी।

भारतेन्दु युग की राजनीतिक परिदृश्यों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की घटना रही, महारानी विक्टोरिया के घोषणा पत्र से वे बाद में भारतीय बुद्धिजीवी वर्ग के सम्मान की सुरक्षा का अनुभव करने लगा पंडित प्रताप नारायण मिश्र ने ब्राह्मण में लिखा है–

"महारानी विक्टोरिया यद्यपि महादयाल  
चाहति किये प्रजान का पुत्र सरिस प्रतिपाल  
ये हमारे दुरभाग ते दूर बसति वह हाय  
बिन जाने भारत निपति के हि विधि करे उपाय"

भारतेन्दु युगीन पत्रकारिता में तत्कालीन युगीन परिस्थितियों का स्पष्ट चित्रण परिलक्षित होता है। भारत में समय–समय पर अनेकों आक्रमण हुए, जिससे भारत की अर्थव्यवस्था बुरी तरह आहत हुई, जिससे हिन्दी पत्रों कवि वचन सुधा, समाचार, सुधावर्णन और जगत समाचार आदि ने अंग्रेजों की इस नीति की आलोचना की लार्ड मेयो ने अनेकों कर लगाये थे। अनेको अंग्रेज वायसराय ने भारतीयों के साथ बर्बरता पूर्ण व्यवहार किया लिटन द्वारा लगाये गये टैक्सों की भार जहाँ भारतीय जनता के लिए असह्य हो उठा वही अकसल महामारी जैसी प्राकृतिक आपदाओं से जनता कराह उठी, सार सुधानिधि कलकत्ता में लिखा है, कि "टैक्स पर टैक्स अकाल पर अकाल मरी पर मरी यहाँ देखी जाती है, नित्य नये–नये आर्हनों से बेचा जाता है।" भारतीयों पर अंग्रेजो के इन अपमानों को दूर करने के लिए पत्र–पत्रिकाओं के माध्यम से आन्दोलन का स्वर मुखरित हो गया। 1880 ई० में लार्ड रिपन वायसराय होकर आये। लार्ड रिपन उदार अधिकारी थे, जिन्होनें प्रशासनिक व्यवस्था में कई सुधार किए ब्राह्मण के सम्पादक पंडित प्रताप नारायण मिश्र ने तो उनकी प्रशंसा में यह तक कह दिया कि,

"रामचंद्र वह अरु अकबर  
कह लार्ड रिपन कहें  
को आदर सा नहि सुमिरत  
आरज अपनी मह"

लार्ड रिपन ने भारतीय जनमानस में एक पहचान बनाई, हिन्दी के अनेक लेखकों जैसे– प्रताप नारायण मिश्र प्रेमचन्द्र आदि ने लार्ड रिपन की प्रशसा की।

"रिपन गयो जब से उत हाथ,  
तब सो विपत परी उत हाथ  
डफरिन लार भये इत हाथ,  
प्रथम परे अति सरस सुनाय  
पर इत आप किये मन भाय"

भारतेन्दु युग में जहाँ जनमानस राजनैतिक व्यवस्था से दुःखी था वही सामाजिक स्थिति बड़ी विषम थी चारों ओर जाति भेद, वर्ण भेद, संप्रदाय भेद से मानव अत्यन्त दुखी था। पुरे समाज में कुरीतियों, रूढ़ियाँ हावी हो रही थी, किन्तु भारतेन्दु युगीन पत्रों ने इन पर सामाजिक मार्ग दर्शन के दायित्व का निर्वाह किया, जातिभेद की संपूर्ण प्रक्रिया विद्वेष पर प्रहार करते हुए तत्कालीन पत्रों मे खूब लिखा जातिभेद वर्ण भेज संप्रदाय भेद ने समाज को महारोगी बना दिया है।

आरंभ में पत्रकारिता तथा पत्र प्रकाशन का उद्देश्य देश साहित्य और समाज सेवा था ब्रिटिश शासन के विरुद्ध जन भावनाएं उभरने से पत्रकारिता में आर्थिक प्रेरणा का समावेश हुआ आज उस समय अंग्रेज सरकार ऐसी पत्रों को प्रोत्साहन देती थी जो अंग्रेजी राज्य की आलोचना ना करें आज विज्ञान में चाहे जितनी भी प्रगति क्यों ना कर ली हो लेकिन लिखित शब्दों जैसी पत्रकारिता की भाषा जिसे हम प्रिंट मीडिया कहते हैं, उसका भी महत्व कम नहीं हुआ है समाचार पत्र जहां समाज का दर्पण है वहां साधारण जनता के लिए ज्ञान का स्रोत भी है भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के समय में हिन्दी पत्र–पत्रिकाओं के प्रकाशन के क्षेत्र के एक क्रान्ति मुखरित हुई। अनेक नेय तथा सफल प्रयोग हुए। जिससे हिन्दी पत्रकारित को एक स्वच्छ, और सुरुचिपूर्ण दिशा मिली, पत्र–पत्रिकाओं के माध्यम से साहित्यकारों ने आम जनता पर सीधा सम्पर्क स्थापित किया। अपने लेख, कविता नाटक कहानी इत्यादि को माध्यम बनाकर आम जनता तक पहुँचने की कोशिश की. इस साहितियक क्रान्ति का नेतृत्व भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने किया।

भारतेन्दु युगीन पत्रों ने सचमुच अंग्रेजों के समक्ष तोपों का कार्य किया। इसी के परिणाम से राष्ट्रीय काँग्रेस की स्थापना हुई। भारतेन्दु युग में जिन पत्र–पत्रिकाओं ने जन्म लिया उनका एकमात्र उद्देश्य था सामाजिक तथा राष्ट्रीय उन्नति हो ।

1868 में भारतेन्दु ने कवि वचन सुधा का प्रकाशन किया इस प्रक्रिया ने न केवल हिन्दी पत्रकारिता को वरन हिन्दी गद्य साहित्य में भी अभूतपूर्व परिवर्तन ला दिया था। इस पत्रिका ने देश के लोगों को भाषा, साहित्य और देश प्रेम की शिक्षा दी थी। ब्रिटिश शासन ने भारतेन्दु को कभी अपना राजभक्त नहीं समझा और भारतेन्दु पर अनेको अत्याचार किये, भारतेन्दु ने सीधे जनता से निवेदन किया कि "मेरे ग्राहकों अब तुम हमसे न रूष्ट हो, क्योंकि अब हमें तुम्हारे बिना किसी का अवलम्ब नहीं।

भारतेन्दु सत्य के उपासक थे, और उन्होंने सत्य के लिए सरकारों की कृपा को सदैव ठुकराया, सत्य के लिए पत्र की सहायता की अपील करते हुये उन्होंने लिखा कि–

"अब केवल तुम्हीं लोगों का भरोसा है, सो तुम लोग भी मत रूष्ठ हो, "कवि वचन सुधा" स्वरूप साहित्य होने के साथ–साथ सामाजिक समाचारों वाली तथा राजनीतिक विशिष्ट होती थी, साथ ही इसमें सूचना, स्थिति एवं सम्पादकीय मत के भी दर्शन होते थे। 01 सितम्बर, 1833 से कवि वचन सुधा साप्ताहिक हो गया, इन पत्रिका ने सामजिक समस्याओं का संजीव चित्रण प्रस्तुत किया, जिससे देश में महिलाओं की शिक्षा–दीक्षा और समानता के लिए इस पत्र के माध्यम से आवाज उठाई। धार्मिक कुरीतियों, रूढ़िवादियों और अधविश्वासों पर भी इस पत्र ने सदैव प्रहार किया।

भारतेन्दु ने सन् 1873 से हरिश्चन्द्र मैगजीन का प्रकाशन प्रारम्भ किया, इस पत्रिका में न केवल उच्चकोटि के रचनाकारों के विचारों और साहित्य को जनता के सामने रखा, साथ ही नये रचनाकारों लेखकों को भी आश्रय दिया। इस मैगजीन के प्रथम अंक से ही गम्भीर राष्ट्रीय समस्याओं के चिन्तन की झलक मिलती है। जैसे– यदि प्रजा है तो उसकी अजा–सी बलि क्यों दी जा रही है।

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने हरिश्चन्द्र चंद्रिका के नाम पत्रिका में जहाँ शुद्ध साहित्यिक चिन्तन का परिचय मिलता वहीं इस पत्रिका में निबन्ध यात्रावृत आदि को अत्यन्त साधारण शैली में व्यक्त किया, जिसे आम जनता पढ़ व ज्ञान अर्जित कर सके। आज के इस अत्याधुनिक दौर में जब महिलाओं और बच्चों के सर्वागीण विकास के लिए चिन्तन, पद्धति व उनके विकास की कल्पना हर क्षेत्र में की जा रही है।

भारतेन्दु जी ने दासता के उस युग में इस देश की महिलाओं को राष्ट्रीय, सामाजिक सांस्कृतिक और साहित्यिक चिन्तन धारा से जोड़ने के लिए एक अलग पत्रिका का प्रकाशन किया।

यह पत्रिका महिलाओं की उपयोगी पत्रिका श्बाला बोधिनी में नारियों में आदर्श आचरण की प्रवृति को बदलते हुए उनके शौर्य, पराक्रम और शक्ति का स्मरण दिलाने का अत्यन्त महत्वपूर्ण कार्य ब्रिटिश दासता के उस घोर संवेदनशील दौर में बाला बोधिनी के प्रकाशन से स्त्रियों और बच्चों में एक नई क्रान्ति जागी।

भारतेन्दु ने 1878 में भारत मित्र में भी साहित्यिक समस्याओं पर लेख, कवितायें के साथ–साथ इनमें अनेको विज्ञापन भी छपा करते थे। एक पाठक ने लिखा कि ष्कृपया भारत मित्र का नाम बदल कर इश्तहार पत्र कर दिया जाये, प० हर मुकुन्द शास्त्री भी भारत मित्र के अवैतनिक सम्पादक रहे। इनके अतिरिक्त हनुमान प्रसाद, नित्य गोपाल मलिक, केदारनाथ तथा मनोहर दास खन्ना आदि भी रहे. भारत मित्र के विद्वान सम्पादकों की एक लम्बी श्रृंखला रही। इससे एक महत्वपूर्ण छाप बनी रही जो आगे चलकर दैनिक हो गया।

भारतेन्दु के युग में ही सार सुधा निधि पंडित दुर्गा प्रसाद तथा पंडित गोबिन्द नारायण आदि इसके सम्पादक रहें जिससे हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में सराहनीय कार्य किये ।

हिन्दी पत्रकारिता में पंडित द्वारिका प्रसाद जी ने महत्वपूर्ण योगदान दिया। उचित वक्ता के प्रकाशन ने हिन्दी पत्रकारिता ने सामाजिक और प्रशासनिक अव्यवस्थाओं की ओर आम जनता को आकृष्ट किया, सती प्रथा जैसी कुप्रथा समाज में कोढ़ के समान पनप रही थी। इन पत्रिकाओं ने इस बढ़ती कुप्रथा को रोकने के लिए मानव को जाग्रत किया।

भारतेन्दु युग में इनके अतिरिक्त भी अनेक पत्र ६ पत्रिकायें प्रकाशित हुई। भारतेन्दु ने पत्रकारिता के माध्यम से स्वदेशी आन्दोलन एवं भारत की स्वतन्त्रता का सूत्रपात किया।

अतः हम यह कह सकते हैं, कि पत्र–पत्रिकाओं के अभाव में साहित्य का विकास सम्भव नहीं है। आधुनिक काल के साहित्य में जितने परिवर्तन हुए है अथवा हो रहें हैं, उनका पूर्वाभास पत्र–पत्रिकाओं के माध्यम से मिल जाता है। शुद्ध साहित्यिक पत्रिकाओं के प्रकाशन में काफी कठिनाइयों है। श्साहित्य और पत्रकारिता एक दूसरे के पूरक है। पत्रकारिता साहित्य को उसके पाठकों तक पहुंचाने का सबल माध्यम बनती है, और साहित्य पत्रकारिता को संवेदनायुक्त बनाकर ज्यादा से ज्यादा प्रभावशाली होने में मदद करता है। लगता है, ये सबन्ध भविष्य में और भी जयादा प्रगाढ़ होगें।

हिन्दी पत्रकारिता में स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद अनेकों बदलाव आये, हिन्दी पत्रकारिता केवल भारत से ही आम आदमी तक नहीं पहुँची, बल्कि विदेशों में भी इसने अपना सिक्का जमाया, मॉरिशस, सहरीनाम, फीजी आदि देशों में जहाँ हिन्दी बोलने और समझने वाले लागों की अच्छी संख्या है, वहीं पत्रकारिता का प्रचार किया। निश्चित रूप से वहाँ हिन्दी की लोकप्रियता के कारण ही हिन्दी पत्रकारिता विकसित हुई। विदेशों में हिन्दी भाषियों ने अपनी

संस्कृति का परित्याग नहीं किया, वहाँ आज भी यज्ञ, तपस्या, आश्रम, जप, पूजा–पाठ, शक्ति, श्रद्वा आदि शब्दों और कार्य जुड़े होने के कारण ही हिन्दी की पत्र–पत्रिकाएँ वहा लोकप्रिय हैं। विज्ञान के वरदान का यह परिणाम है कि अब संसार उपग्रह द्वारा एक ही अखबार के विभिन्न स्थानों से संस्करण निकल रहे हैं। आज दैनिक जगारण, अमर उजाला, भास्कर, हिन्दुस्तान, आदि अखबार इस प्रमाण हैं।

पत्रकारिता साहित्य की विद्या है, किसी पत्रिका अथवा पत्र का उद्देश्य सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक और सा कृतिक विकृतियों पर करारा प्रहार कर राष्ट्र को नई दिशा देना साहित्य का प्रमुख उद्देश्य है। साहित्यकार राष्ट्र व समाज का सजग पहरी होता है। बालकृष्ण राय का मानना है कि समसामयिक परिवेश से किसी न किसी रूप में प्रत्येक लेखक प्रेरणा ग्रहण करता है, चाहे वह साहित्यकार हो या पत्रकार दोनों ही लेखक हैं। दोनों ही सर्जनाकार हैं। दोनों देश और काल के आयामों पर अपनी–अपनी विशिष्ट परम्पराओं के अतिरिक्त संशिलष्ट सांस्कृतिक परम्परा उस सामाजिक चेतना से संबद्ध है, जिससे उन्हें अपनी बार औरो के समक्ष प्रस्तुत करने की प्रेरणा और शक्ति मिलती है और प्रत्येक साहित्यकार अनिवार्यतः पत्रकार भी है, अंग्रेजी में एक कहावत है कि पत्रकारिता जल्दबाजी में लिखा गया साहित्य है

आज के समय में पत्र–पत्रिकाओं की बाढ सी आने लगी है । विभिन्न रुचियों के आधार पर समाचार पत्र और पत्रिकाएं प्रकाशित की जाने लगी है भारतेंदु हरिश्चंद्र बाबू बाल कुमुद गुप्त प्रताप नारायण मिश्र बालकृष्ण भट्ट मदन मोहन मालवीय रुद्र दत्त शर्मा ईश्वरी प्रसाद शर्मा आदि अनेक वरिष्ठ पत्रकारों ने भारतीय स्वाधीनता संग्राम को आगे बढ़ाने और तत्कालीन नौकरशाही को जड़ से उखाड़ फेंकने में अपनी अनन्य लेखनी द्वारा साहित्य में अत्यंत सहयोग दिया उन्हीं के माध्यम से आज हम पत्रकारिता के क्षेत्र में विज्ञान के साथ–साथ साहित्य क्षेत्र में आगे बढ़ रहे हैं।

## सन्दर्भ


1. सकलानी शक्ति प्रसाद उत्तराखंड में पत्रकारिता का इतिहास सन 2004
2. पत्रकारिता का इतिहास एवं जनसंचार माध्यम डॉक्टर संजीव भनावट यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन जयपुर पृष्ठ संख्या एक
3. हिंदी पत्रकारिता कृष्ण बिहारी मिश्र (जाति चेतना और खड़ी बोली साहित्य की निर्माण भूमि पृष्ठ संख्या 31
4. भारतेंदु युगीन पत्रकारिता कुश चतुर्वेदी पृष्ठ संख्या 4
5. वही पृष्ठ संख्या 6
6. भारतेंदु हिंदी पत्रकारिता उस चतुर्वेदी पृष्ठ संख्या 8
7. वही पृष्ठ संख्या 27
8. भारतेंदु युगीन हिंदी पत्रकारिता चतुर्वेदी पृष्ठ संख्या 28

9. वही पृष्ठ संख्या 29
10. वही पृष्ठ संख्या 34
11. वही पृष्ठ संख्या 37
12. 21वी सदी और हिंदी पत्रकारिता डॉ मधुसूदन त्रिपाठी (अमरेंद्र कुमार) पृष्ठ संख्या 70
13. जनसंचार संपादक राधे शर्मा शर्मा पृष्ठ संख्या 210
14. 21वीं सदी की हिंदी पत्रकारिता डॉ मधुसूदन त्रिपाठी पृष्ठ 111( अमरेंद्र कुमार निशांत सिंह)